



जब से सृष्टि की रचना हुई है तब से सबकुछ समय के चक्र पर, उसके मिजाज पर, उसकी रजामंदी पर, उसी की नाराजगी पर चल रहा है। और न जाने कितने हजारों साल ये सिलसिला चलता रहेगा। उसी समय के पलों को जोड़-जोड़ कर बने दिन, बरस और सदियों गुजरती रही हैं। परिकथाएँ असल में हमें विरासत में ही मिली हैं। इसका सफर शुरू भी तभी से हुआ जब धरती पर मनुष्यों ने बोलना सीखा, लिखना सीखा। फिर धीरे-धीरे कथाएँ लिखी जाने लगीं, पात्र



आखिर कहां से आती हैं परियां ?

दिखाई जाती रही है। परियाँ जो बादलों से प्यार करती हैं तथा निडर बच्चों की मदद के लिए हरदम आसमान से उड़ती हुई अचानक जमीन पर उतरती हैं लेकिन जब कोई बुरा काम करता है तो उसे सबक सिखाने का काम करने के लिए परियाँ अपना क्रोधी व शक्तिशाली रूप भी दिखाती हैं। ब्रिटेन की

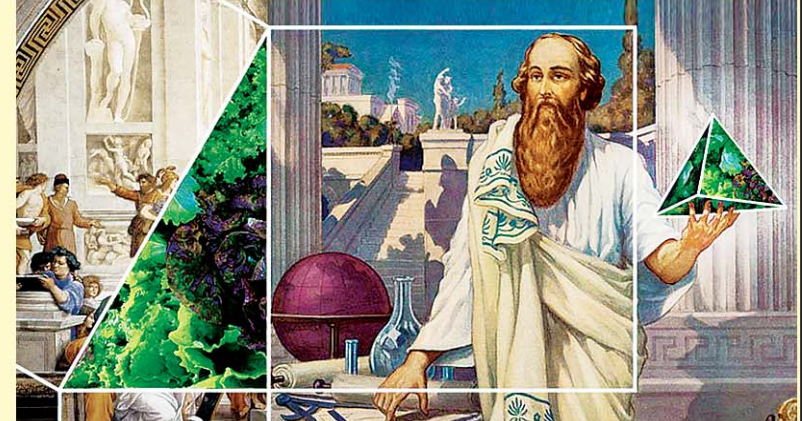


बढ़ाया या संजोया ना हो। कहानी सुनाने की या लोरी सुनाने की परम्परा तब भी थी, आज भी है। शहरों का आलीशान कल्चर भी इस परम्परा को तोड़ न पाया है। गाँवों में आज भी डिबरी की टिमटिमाती रोशनी में बुजुर्ग अपने नातों-पोतों को कहानी के विचित्र संसार में मनगढ़ंत पात्रों के बीच घुमाया करते हैं। प्राचीनकाल में मनुष्य जब लम्बी यात्राओं के लिए निकलता था तब रेगिस्तान के लम्बे-लम्बे रास्ते, सागर की लम्बी-लम्बी यात्राओं में जब सिर्फ धरती, आसमान, समुद्र, पेड़-पौधे कहानी के पात्र हुआ करते थे फिर धीरे-धीरे उसमें परियाँ भी जुड़ने लगीं। बस तभी से हुआ परिकथाओं का जन्म। संसार की अधिकांश लोक-कथाओं में परियों का वर्णन जादुई व्यक्तित्व, सौम्य, स्वच्छ, सफेद कपड़े, बड़े घुंघराते आकर्षक बाल के रूप में

रेणु जैन

लोक-कथाओं में पुरुष पुरी का रूप भी देखने को मिलता है। वहाँ कहानियों में वे साहसी बच्चों की मदद करते दिखाई देते हैं। जर्मनी इस मामले में सबसे आगे था। वहाँ परियों का संसार इतना रोमांचक था कि बच्चे तो बच्चे बड़े भी इस तरह के साहित्य के दीवाने थे। सत्रहवीं शताब्दी में 'चेरी ऑफ जैनोर' की पुस्तक भी प्रकाशित हुई जो काफी लोकप्रिय हुई। भारत में भी परियों से संबंधित कई किताबें निकलीं तथा मशहूर हुईं। वैसे तो परिकथाओं के अद्भुत संसार को सभी देशों ने अपने-अपने हिसाब से संजोया है, लेकिन ब्रिटेन के हेन्स एंडरसन परिकथाओं में सबसे चर्चित व्यक्ति रहे। उन्होंने परियों के उस रूप को ज्यादा उभारा है जिसमें वह बच्चों के बहादुर होने पर उन्हें प्यार करती हैं तथा वादा करती हैं कि वे उन्हें जब याद करेंगे वह जरूर आएंगी। बुरा काम न करने की सलाह भी देती हैं। इसी तरह अमरीकी लेखक लुई कैरोल की 'एलिस इन वंडरलैंड' विश्व साहित्य में अपना स्थान बना सकी। मशहूर परिकथाओं में 'सिंड्रेला', 'द लिटिल वेड राइडिंग' आदि कई काफी मशहूर हुईं। कहानियों में परियों को बुराई पर अच्छाई की विजय हो मूल बिन्दु रहता है। जादुई अँगूठी, जादुई पक्षी, जादुई चिराग, उड़न-खटोला, चमत्कारी बौने, चमत्कारी पौधे इन सबका ताना-बाना इतना रोमांचक रहता है कि बच्चे तो बच्चे बड़े भी मंत्रमुग्ध हो जाते हैं।

वैसे इस वैज्ञानिक युग में इन जादुई बेसिर-पैर की बातों का कोई महत्व हो या न हो लेकिन कहने वाले ऐसा भी कहते हैं कि इससे बच्चे भाग्यवादी हो जाते हैं, उन्हें भी बस जादू की छड़ी ही चाहिए होती है। खैर जो भी हो इन कथाओं का जादू कम नहीं है।



विज्ञान की शान महान वैज्ञानिक पाइथागोरस

तब, जब गणित शैशवकाल में था, एक व्यक्ति ने अपनी अद्वितीय विद्वता के बल पर एक ऐसी प्रमेय का सूत्रपात किया, जो दुनिया भर में प्राथमिक कक्षाओं में ही विद्यार्थियों को पढ़ा दी जाती है, उन महान गणितज्ञ का नाम था पाइथागोरस।

इस महान गणितज्ञ और दार्शनिक का जन्म आज से 2500 वर्ष से भी अधिक पहले यूनान के पास सामोस नामक टापू में हुआ था। दुर्भाग्यवश उन्होंने अपने कार्यों में कोई लिखित प्रमाण नहीं छोड़े। क्योंकि उस समय लिखने के साधनों का विकास नहीं हुआ था। कागज तो दुर्लभ था ही, पार्चमेंट या भोजपत्र पर लिखना भी प्रचलन में नहीं था। उनके विषय में आज की उपलब्ध जानकारी बाद के लेखकों ने लिखी है। सभी तथ्य सुनी-सुनाई बातों को आधार बनाकर तैयार किए गए हैं। प्रतिपादित की गई पाइथागोरस की प्रमेय का उपयोग गणित में बहुत अधिक होता है। इस प्रमेय के अनुसार किसी समकोण त्रिभुज में दो भुजाओं के वर्गों का योग तीसरी भुजा (कर्ण) के वर्ग के बराबर होता है। यदि किसी समकोण त्रिभुज में एक भुजा की लम्बाई तीन सेंटीमीटर हो तो तीसरी भुजा यानी कर्ण की लम्बाई 5 सेंटीमीटर होगी। इसका मतलब यह हुआ कि तीन सेंटीमीटर की भुजा में एक एक सेंटीमीटर के नौ वर्ग होंगे और चार सेंटीमीटर की भुजा में एक-एक सेंटीमीटर के 16 वर्ग होंगे। इन दोनों का योग होगा 25। इस प्रकार सबसे लम्बी भुजा में 25 वर्ग होंगे अर्थात् उस भुजा की लम्बाई 5 सेंटीमीटर होगी।

इसा पूर्व छठी शताब्दी में यूनानी बहुत धनवान थे और उनमें सभ्यता का विकास बहुत हो चुका था। सामोस टापू यूनानियों का एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र था यानी बालक पाइथागोरस एक धनी परिवार का बेटा था। फलतः स्वाभाविक रूप से उसे बहुत ज्यादा शिक्षा का अवसर मिला था। बाल्यकाल से ही पाइथागोरस बड़े प्रतिभाशाली थे। 16 वर्ष की आयु में ही अधिक होता है। इस प्रमेय के अनुसार किसी समकोण त्रिभुज में दो भुजाओं के वर्गों का योग तीसरी भुजा (कर्ण) के वर्ग के बराबर होता है। यदि किसी समकोण त्रिभुज में एक भुजा की लम्बाई तीन सेंटीमीटर हो तो तीसरी भुजा यानी कर्ण की लम्बाई 5 सेंटीमीटर होगी। इसका मतलब यह हुआ कि तीन सेंटीमीटर की भुजा में एक एक सेंटीमीटर के नौ वर्ग होंगे और चार सेंटीमीटर की भुजा में एक-एक सेंटीमीटर के 16 वर्ग होंगे। इन दोनों का योग होगा 25। इस प्रकार सबसे लम्बी भुजा में 25 वर्ग होंगे अर्थात् उस भुजा की लम्बाई 5 सेंटीमीटर होगी।



के.पी. सिंह

इस बालक की प्रतिभा इतनी ऊंचाईयाँ ले चुकी थी कि इसके प्रश्नों के उत्तर देने से शिक्षक विचलित हो उठते थे। (शेष अगले रविवारीय अंक में)

दुनिया की सबसे ऊंची इमारत दो टोक्यो स्काई ट्री को जन्तने के लिए खोल दिया गया है। 36,900 वर्ग मीटर के इलाके में बने इस टॉवर को सिहाशी नहीं बल्कि ऑब्जरवेरी के तौर पर बनाया गया है।

दुनिया की सबसे ऊंची इमारत



टोक्यो स्काई ट्री

ऑब्जरवेरी का निर्माण किया गया है। ऑब्जरवेरी डेक पर पहुंचने के लिए तेज गति वाली लिफ्ट का इस्तेमाल होगा। गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में इसे सबसे ऊंची इमारत का दर्जा दिया गया है। इससे पहले चीन की कैंटन टॉवर जोकि 600 मीटर ऊंची थी उसने गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में जगह बनाई थी। ओबयारी द्वारा बनाए गए इस दुनिया में नम्बर एक टॉवर की ऊंचाई 634 मीटर है। स्काय ट्री गुआंगजो टॉवर (चीन) और सी.एन. टावर (कनाडा), ओस्थाकिनो टॉवर (रूस), ओरिएंटल पर्ल टॉवर (चीन), मिलाद टॉवर (ईरान) और मीनार टॉवर कुआलालम्पुर (मलेशिया) से ऊंचा है। टोक्यो स्काई ट्री के निर्माण में जबरदस्त तकनीकी चुनौती थी। इस नए बैरिक्क मील का पत्थर के निर्माण में ओबयारी ने अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग किया था। इसके निर्माण में स्लिपफॉर्म कंस्ट्रक्शन का इस्तेमाल किया गया है। स्लिपफॉर्म तकनीक में विशाल संरचनाओं के ढांचे को जैक की सहायता से उत्तरोत्तर उठाया जाता है। कंक्रीट मिश्रण को सुरक्षित और उच्च परिशुद्धता के साथ डालते हुए लगातार टोस रखकर निर्माण किया जाता है। तेज हवा तथा भूकम्प के खतरे को ध्यान में रखते हुए इस इमारत की नींव में एक विशेष तकनीक का इस्तेमाल किया गया है। जापान के भूकम्प वाले क्षेत्र में इतनी ऊंची इमारत बनाने पर कई इंजीनियरों और विशेषज्ञों ने संदेह जताया था। लेकिन टोक्यो स्काई ट्री को बनाने समय उच्च भूकम्परोधी तकनीक का इस्तेमाल किया गया।

भारत का इश्योरेंस सेक्टर दुनिया में पहले नंबर पर है। आरबीआई ने बैंकों को भी इश्योरेंस पॉलिसियां बेचने की अनुमति दी है। इसके साथ ही बीमा में 49 प्रतिशत विदेशी निवेश, प्रधानमंत्री जनधन योजना जैसी नीतियों से भी इसका विस्तार हो रहा है। यही वजह है कि सार्वजनिक तथा निजी, दोनों क्षेत्रों में समान रूप से करियर के अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। करियर के लिहाज से इस समय यह बढ़िया सेक्टर है। इसमें काम की कई कैटेगरी हैं। अलग-अलग कैटेगरी के लिए अलग-अलग पैकेज हैं। सामान्य तौर पर इसके प्रोफेशनल तीन लाख रुपए से लेकर 15 लाख रुपए वार्षिक तक की कमाई कर सकते हैं। आइए हम आगे बात करते हैं बीमा उद्योग में मौजूद जाँब के मौकों के बारे में। इसके लिए सबसे पहले यह जानना चाहिए कि कहाँ, कितने मौके मौजूद हैं।

हेड ऑफिस में करियर : हेड ऑफिस, इश्योरेंस कंपनी का वह स्थान है, जहाँ विभिन्न विभागों से संबंधित कई तरह के काम संपन्न किए जाते हैं। यहाँ कई विभागों में अलग-अलग पदों पर कार्य किया जा सकता है।

एक्जुरियल डिपार्टमेंट : यह विभाग किसी भी इश्योरेंस कंपनी

का महत्वपूर्ण विभाग होता है। इस विभाग का काम नई पॉलिसियां बनाना और चल रही पॉलिसियों में समय-समय पर परिवर्तन करना है। यह विभाग हमेशा कंपनी के लाभ के लिए जिम्मेदार रहता है। इस विभाग की यह भी जिम्मेदारी होती है कि वह लाइफ और



इश्योरेंस सेक्टर में हैं जाँब की बेहतरीन संभावनाएँ

जनरल इश्योरेंस बिजनेस की डिजाइनिंग और पॉलिसी की प्राइसिंग तय करे। साथ ही फंड्स से होने वाले लाभ को मॉनीटर करे।

इसके अलावा यह विभाग इश्योरेंस की मार्जिन, अन्य कानूनी विवादों तथा लाभ में होने वाले नुकसान की देखभाल करता है। गणित या सांख्यिकी में ग्रेजुएट्स के लिए यह जाँब सही है;

क्योंकि यह पूरी तरह गणितीय व सांख्यिकीय आंकड़ों पर निर्भर होता है। इश्योरेंस सेक्टर में इस जाँब के लिए सबसे ज्यादा वेतन मिलता है। शुरुआती दौर में इसमें करीब सात से आठ लाख रुपए वार्षिक का वेतन मिलता है। इसके लिए इंस्टीट्यूट ऑफ एक्जुरीज ऑफ इंडिया से इसका कोर्स किया जा सकता है।

अंडरराइटिंग डिपार्टमेंट : यह विभाग, इश्योरेंस कंपनी के जोखिम का कार्य संभालता है। इसके तहत किसी व्यक्ति को

मोहम्मद रज़ा

पॉलिसी दी जाती है। यह विभाग यह चेक करता है कि किसी व्यक्ति को पॉलिसी दी जाए या नहीं। लाइफ व नॉन लाइफ सेगमेंट में अंडरराइटर्स की आवश्यकता पड़ती है। अंडरराइटर्स, बीमा के जोखिम को देखते हैं और उसका रिस्क मैनेजमेंट संभालते हैं। ज्यादातर मौकों पर इस विभाग के लिए मेडिकल या लाइफ साइंस बैकग्राउंड के लोगों को वरीयता दी जाती है और शुरुआती सैलरी करीब चार से पांच लाख रुपए वार्षिक तक हो सकती है। एनआईए, पुणे, बीमटेक, आईआईआरएम और अन्य इंस्टीट्यूट यह कोर्स संचालित करते हैं।

बीपीओ, केपीओ व आईटी इंडस्ट्री : अब विभिन्न बीपीओ, केपीओ व आईटी इंडस्ट्री में भी इश्योरेंस एक्सपर्ट्स की मांग बढ़ गई है। आईटी कंपनियों में बिजनेस एनालिस्ट की जरूरत होती है। ये वे प्रोफेशनल होते हैं जिनका इश्योरेंस सेक्टर में तकनीकी अनुभव होता है। ये कंपनियाँ विभिन्न प्रकार के लाइफ व नॉन लाइफ साफ्टवेयर तैयार करती हैं, जिसकी मांग न सिर्फ भारत में है बल्कि विदेशों में भी है। हालांकि इस काम के लिए मुख्यतः आईटी एक्सपर्ट की जरूरत होती है लेकिन चूंकि ये उत्पाद, बीमा से संबंधित होते हैं इसलिए बीमा के लोग साफ्टवेयर डेवलपर को बीमा क्षेत्र की तकनीकी जानकारी देते हैं। इन एनालिस्ट्स को उनके अनुभव के आधार पर साढ़े तीन लाख से पंद्रह लाख रुपए वार्षिक वेतन मिलता है।

-दिवंकलदीप कौर सैणी

दुनिया की सबसे खतरनाक जगह पर बसा गांव

केस्टेलफोलिट डे ला रोका



बस्ती बसी। यहाँ के घरों को भी ज्वालामुखी से बनी चट्टानों से ही बनाया गया है। 13वीं शताब्दी में चट्टान के कोने पर सेंट सालवोडोर चर्च स्थापित किया गया था, जो आज भी देखा जा सकता है। जमीन से 50 मीटर ऊपर और लगभग 1 किमी के क्षेत्र में बसा केटेलोनिया का केस्टेलफोलिट डे ला रोका गाँव जिस चट्टान पर बसा है, वह एकदम खड़ी और छोटी है और उस पर बने घर चट्टान के किनारे बने हैं, जिन्हें देखने भर से किसी की भी साँस हलक में रुक जाए।



दूसरा बेगुदा में 192,000 साल पहले हुआ था इसके बाद धीरे-धीरे ये ज्वालामुखी जमने लगा और बेसाल्ट चट्टानों में बदल गया। चट्टानों को उंडा होने में लंबा समय लगाए। इसके बाद यहाँ

वैसे दुनिया में लोग न जाने कहां-कहां जाकर बस जाते हैं। ऐसी-ऐसी दूरस्थ जगह जाकर बसे हैं जहाँ सूर्य की किरण तक नहीं पहुंच पाती। दरअसल दुनिया में कई लोग ऐसे हैं जो पहाड़ या फिर ऊंची चट्टानों पर घर बनाना पसंद करते हैं, लेकिन कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपनी जान को जोखिम में डालकर ऐसी जगह रहते हैं, जहाँ वे सुरक्षित नहीं हैं। ऐसी ही एक जगह स्पेन का 'केस्टेलफोलिट डे ला रोका' गाँव है, जो बेसाल्ट के चट्टान पर बसा है, जहाँ हमेशा मौत का साया मंडराता रहता है। फ्लूवीया और टोलोनेल नदी की सीमा में आने वाला यह गाँव स्पेन का सबसे छोटा गाँव है। चट्टान पर बसा यह गाँव किसी खतरे से कम नहीं है क्योंकि यहाँ के कई घर चट्टान के एकदम किनारे पर बने हैं। आपको बता दें कि लाखों साल पहले यहाँ दो ज्वालामुखी विस्फोट हुए थे। पहला विस्फोट बटेट गाँव में 217,000 साल पहले और